राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अङ्क ६] तृतीय विधान सभा के छठा सत्र, १९६४ का प्रथम दिवस [संख्या १

सोमवार, दिनांक ३ अगस्त, १९६४

विधान सभा की बैठक म० प० ३.३० बजे विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।

———

(श्री रामनिवास मिर्धा, अध्यक्ष, पदासीन)

———

भारत के भूतपूर्व प्रधान मंत्री, पण्डित जवाहरलाल नेहरू, के दुःखद एवं आकस्मिक देहावसान पर शोक–प्रस्ताव एवं श्रद्धा-ञ्जलियां।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया (मुख्य-- मन्त्री) : माननीय अध्यक्षजी, पिछले सदन की बैठक के बाद आज जब हम यहां एकत्रित हो रहे हैं इस बीच में हमारे देश में हमारे देश के महान नेता पंडित जवाहरलाल जी नेहरू के निधन की वजह से जबरदस्त आघात हुआ है और उस गम्भीर परिस्थिति में आज का यह सदन अपनी कार्यवाही शुरू कर रहा है।

पंडित जवाहरलाल जी नेहरू, हमारे देश के प्रथम प्रधान मंत्री, इस देश के ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व के एक महान विभूति थे। वे एक महान् पुरुष थे जो हमारी सभ्यता संस्कृति एवं राष्ट्रीयता के प्रतीक थे। उन्होंने स्वयं को हमारे राष्ट्रीय जीवन में इतना आत्मसात् कर लिया था कि उनके बिना आज हमारे लिये अपने देश की कल्पना करना भी मुश्किल है। अन्तर्राष्ट्रीय जगत में हमारे देश को जो ख्याति एवं स्थान मिला उसका बहुत कुछ श्रेय उनको ही है।

उन्होंने अपने जीवन भर शोषण एवं उत्पीड़न के विरुद्ध संघर्ष किया। उपनिवेशवाद के शोषण से त्रस्त एशिया एवं अफ्रीका के करोड़ों निवासियों का यदि उन्हें मुक्तिदाता कहा जाय तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। वे स्वतंत्रता और जनतंत्र के पुजारी थे और उन्होंने न केवल हमारे देश को ही स्वतंत्रता

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

दिलाई बल्कि दुनियां के हर कोने में हो रहे उत्पीड़न, शोषण एवं दमन के विरुद्ध अपनी आवाज बुलन्द की।

वे शांति के अग्रदूत थे। वे सहयोग एवं सद्भावना के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय जगत में शांतिपूर्ण सहअस्तित्व चाहते थे। अणुबमों के विनाशकारी विस्फोटों एवं शस्त्रास्त्रों के भार से त्रस्त मानवता की सुरक्षा के लिए उन्होंने सदैव विश्व के राजनीतिज्ञों को सलाह दी कि केवल शांति के मार्ग से ही मानवता का कल्याण हो सकता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि गत अट्टारह वर्षों में कितने ही ऐसे अवसर आये जब कि विश्व-युद्ध का सूत्रपात होने को ही था किन्तु ऐसे प्रत्येक अवसर पर हमारे स्वर्गीय प्रधान मंत्री ने लड़ने से तत्पर गुटों को समझौते का मार्ग सुझा कर शांति भंग नहीं होने दी। इस शांतिदूत के निधन से सम्पूर्ण मानवता अपना रक्षक खो बैठी है।

स्वतंत्रता संग्राम के दिनों से ही वे योजनाबद्ध अर्थ नीति को हमारे राष्ट्र के पुनर्निर्माण का एकमात्र उपाय मान कर चलते थे। उन्हें समाजवाद में गहरी आस्था थी, लेकिन उनका समाजवाद रूढ़िवाद से ग्रस्त कोई किताबी समाजवाद नहीं था। उनके समाजवाद में मानवोचित अधिकारों तथा हमारी राष्ट्रीय सूझ-बूझ का अपूर्व सम्मिश्रण था। यह कहना गलत नहीं होगा कि जहां हमारे राष्ट्र पिता महात्मा गांधी ने हमारे राष्ट्रीय जीवन में राजनैतिक चेतना उत्पन्न की, नेहरूजी ने हमें एक आर्थिक एवं सामाजिक क्रांति के नये मोड़ पर ला खड़ा किया। उनकी यह निश्चित मान्यता थी कि राजनैतिक स्वतंत्रता तभी सुरक्षित रख कर पनप सकती है जब कि आर्थिक दृष्टि से लोग संतुष्ट हों।

१५ अगस्त, १९४७ को जब उन्होंने प्रधान मंत्री का पद सम्भाला तब उन्हें विरासत में एक ऐसी अर्थ व्यवस्था मिली जो पूरी तरह से खोखली हो चुकी थी। विदेशी शासन के लगातार दमन से जन-साधारण की कल्पना शक्ति एवं उत्साह मृत प्रायः हो चुके थे। लेकिन उन्होंने देश के पुनर्निर्माण एवं आर्थिक विकास के कार्य का बीड़ा उठाया और हमारी पंचवर्षीय योजनाएं उसकी साक्षी हैं। भाखरा बांध को देखते समय उन्होंने कहा था कि आज के जमाने में सबसे बड़ा मंदिर, मस्जिद और गुरुद्वारा वे स्थान हैं जहां इन्सान मानव समाज की भलाई के लिए काम करता है। उनका पूरा जीवन मानव समाज की भलाई में ही बीता।

आज जब कि वे हमारे बीच नहीं हैं तो हमारा यह सर्वोपरि कर्त्तव्य हो जाता है कि जिस देश को वे इतना प्यार करते थे उसकी स्वतंत्रता की रक्षा एवं आर्थिक व सामाजिक पुनर्निर्माण के कार्य में बड़ी से बड़ी कुर्बानी देने में भी कोई हिचकिचाहट न करें। हममें से जिनको उनके नेतृत्व में रह कर काम करने का शुभ अवसर मिला है वे यह भली-भांति जानते हैं कि उनकी आत्मा कितनी महान् थी और उनको अपने देश से कितना अधिक प्यार था। उनके प्यार का इससे अधिक बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है कि उन्होंने

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

अपनी वसीयत में यह इच्छा प्रकट की कि मरने के बाद उनके अवशेषों को भारत की धरती पर वहां बिखेर दिया जाय जहां किसान हल बैल लेकर खेती करते हैं। वास्तव में उनकी काया के अवशेष भारत की मिट्टी के कण कण में समा गये हैं। और अब हमारा यह कर्तव्य है कि हम इस धरती पर अधिक से अधिक समृद्धि, सुख और शांति का वातावरण उत्पन्न करने में कोई कसर न उठा रखें। वे जनतंत्र के एक महान् उपासक थे और हमें इस जनतंत्र की रक्षा करने एवं इसे दृढ़ बनाने हेतु आज यह प्रतिज्ञा पुनः दोहरानी है कि हम ऐसा कोई कार्य नहीं करेंगे जिससे हमारी राष्ट्रीय एकता व स्वतंत्रता को क्षति पहुंचे। नेहरूजी के स्वप्नों के देश का निर्माण करना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धान्जली अर्पित करना है।

मैं परम् पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि वे स्वर्गीय प्रधान मंत्री की आत्मा को शांति प्रदान करें।

मैं इस अवसर पर एक प्रस्ताव सदन को स्वीकृति के लिए आपकी आज्ञा से प्रस्तुत करना चाहता हूं। प्रस्ताव इस प्रकार है :

"हमारे देश के प्रथम प्रधान मंत्री भारत रत्न, श्री जवाहरलाल नेहरू, के आकस्मिक निधन पर यह सदन हार्दिक दुःख एवं गहरी वेदना प्रकट करता है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के मार्ग दर्शन में नेहरू जी ने हमारे स्वतंत्रता आन्दोलन का नेतृत्व किया और अपने अथक परिश्रम, त्याग, बलिदान एवं दूरदर्शिता के कारण वे हमारे राष्ट्रीय जीवन में एक नयी क्रांति एवं चेतना उत्पन्न कर सके जिसके फलस्वरूप हमें स्वतंत्रता मिली। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् उन्होंने राष्ट्र के पुनर्निर्माण एवं आर्थिक विकास हेतु हमें योजनाबद्ध नीति का मार्ग दिखाया। अन्तर्राष्ट्रीय जगत में सहयोग एवं सद्भावना के आधार पर शांतिपूर्ण सहअस्तित्व का जो मार्ग उन्होंने प्रशस्त किया उससे सम्पूर्ण मानवता को राहत मिली। इस सबके लिए न केवल हम भारतवासी बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति सदैव उनकी ऋणि रहेगी।

उनकी जनतांत्रिक शासन व्यवस्था में गहरी आस्था थी और समाजवाद के द्वारा वे देश में समानता एवं समृद्धि का वातावरण तैयार करना चाहते थे। उनकी यह उत्कट अभिलाषा थी कि देश सुखी एवं समृद्धिशाली रहे और यहां शांति एवं सहयोग की भावना की उत्पत्ति हो।

यह सदन अपने स्वर्गीय प्रधान मन्त्री के प्रति आदरपूर्ण श्रद्धान्जली अर्पित करता है और श्रीमती इन्दिरा गांधी तथा परिवार के अन्य सदस्यों के प्रति हार्दिक सहानुभूति प्रकट करता है। उनकी स्मृति के प्रति सम्मान प्रकट करने हेतु बिना कुछ कार्यवाही किये सदन की आज की बैठक स्थगित की जावे।"

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह (डूंगरपुर विपक्ष के नेता) : अध्यक्ष महोदय, पंडित नेहरू एक अद्भुत विभूति थे। १५ अगस्त, सन् १९४७ से २७ मई, सन् १९६४ तक वे जनसंख्या के आधार पर विश्व की सबसे बड़ी

(महारावल श्री लक्ष्मणसिंह)

डेमोक्रेसी के निरन्तर एक महान् नेता रहे। यह सौभाग्य की बात है कि आदि से अन्त तक पंडित नेहरू ने अपनी जाहो जलाली और लोकप्रियता निभाई। शायद ही अन्य किसी नेता को यह सौभाग्य प्राप्त हो। करोड़ों उनके देशवासी उनके प्रति अटूट श्रद्धा और प्रेम की भावना रखते थे। करोड़ों देशवासी उनके प्रति अन्ध-विश्वास रख कर उनको अपना हृदय सम्राट मानते थे। करोड़ों भारत वासी उनकी बड़ी से बड़ी भूल को बकसने को तैयार थे।

पंडित नेहरू एक बड़े उदार व्यक्ति थे, उनमें कटुता या बदले की भावना जरा भी नहीं थी। ब्रिटिश सरकार ने उनको कई बार जेल में डाला, किन्तु उनके प्रति कभी भी उन्होंने दुर्भावना प्रकट नहीं की। वे आधुनिक कौमन वेल्थ के रचियता थे, अगर कहा जावे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। वे जंबूरियत और इन्सानियत के एक बड़े समर्थक थे। वे बहुत ही कल्चर्ड और रिफाइन्ड टेस्ट के पुरुष थे। भारत वर्ष में दो हजार वर्षों के इतिहास में यदि मुट्ठी भर विभूतियां की गणना की जावे तो उसमें पंडित नेहरू का स्थान अवश्यमेव होगा, यह निर्विवाद बात है। यदि उनकी तुलना कुछ अंश में महात्मा गांधी से की जावे तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। विदेशों में क्या अमेरिका, क्या उसके साथ के राष्ट्र, क्या रूस और उसके साथ के प्रदेश और क्या कॉमन वेल्थ के देश, क्या नवनिर्मित अफ्रीका के स्वतन्त्र तटस्थ देश, क्या फ्रान्स, क्या जापान, क्या जर्मनी आदि सभी देशों में पंडित नेहरू का स्थान बहुत ही ऊंचा था। वे एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त राजनीतिज्ञ थे, a great statesman of the world.

किसी ने कहा है, "तुम गये, हम सब को जाना है लेकिन तुमसा फिर कहां से आना है" शेक्सपीयर ने कहा है :

"Take him all in all he was a man ; there is not going to be the like of whom again."

पंडित नेहरू की स्मृति अजर और अमर है। मैं इन्हीं शब्दों के साथ सआदर इस प्रस्ताव का अनुमोदन करता हूँ।

श्री भैरोंसिंह (किशनपोल, जयपुर जनसंघ) : अध्यक्ष महोदय, मैं मुख्य मंत्री ने जो प्रस्ताव प्रस्तुत किया है उसका समर्थन करता हूं। अध्यक्ष महोदय, जिस दिन इस देश को इस बात का समाचार मिला कि देश के प्रधान मन्त्री, पंडित जवाहरलाल नेहरू, अस्वस्थ हैं इस अस्वस्थता के समाचार ने देश में एक ऐसी स्थिति पैदा कर दी कि हर वर्ग का आदमी इस बात की कोशिश कर रहा था कि किस प्रकार से मैं जल्दी से जल्दी जा कर रेडियो पर बाकी के समाचार प्राप्त करने के स्थान पर जाकर पंडितजी के स्वास्थ्य के बारे में जानकारी प्राप्त करूं। लोगों की भीड़ जो इस समाचार की जानकारी के लिये स्थान-स्थान पर एकत्रित हुई और उस भीड़ को जब यह समाचार मिला कि पंडितजी का स्वास्थ्य ठीक नहीं है तो ज्यादा चिन्तित होकर वह भीड़ एक मौन भाव से रेडियों पर इस बात की प्रतीक्षा कर रही थी कि ईश्वर जल्दी से जल्दी इस बात का समाचार दे कि पंडितजी का स्वास्थ्य सुधर

(श्री भैरोंसिंह)

रहा है। पर यह देश का दुर्भाग्य था कि लोगों को जिस प्रकार के समाचार की आशा थी उस प्रकार के स्वास्थ्य सुधार के समाचार न सुन कर, कुछ ही समय बाद लोगों ने इस समाचार को सुना कि पंडितजी का स्वर्गवास हो चुका। मैं ऐसा समझता हूं कि इस समाचार ने न केवल हमारे देश में, बल्कि संपूर्ण विश्व में, इस प्रकार का असर पैदा किया जिससे प्रत्येक व्यक्ति यह महसूस करने लगा कि पंडित नेहरू भारतवर्ष के प्रधान मन्त्री अवश्य थे, परन्तु वे विश्व के नेता थे। मैं यह अवश्य कहूंगा कि विश्व के समक्ष जब कोई पेचीदा समस्या पैदा हुई तो अलग अलग विश्व के नेताओं ने मस्विदा करके उस मामले में पंडितजी से अवश्य राय ली है और कई बार पंडितजी की राय उन झगड़ों को बचा पाई है, जिन झगड़ों से विश्व दूर रह कर आज उन्नति की ओर बढ़ना चाहता है।

हमारे देश में पंडितजी ने शिक्षा के बाद राजनीति में प्रवेश कर देश की आजादी के लिये संघर्ष किया। मैं ऐसा समझता हूं कि उनकी शानी के व्यक्ति बहुत कम ऐसे मिलेंगे जो जीवन के आरम्भ से अन्त तक, यानी १९४७ तक देश की आजादी के लिये और १९४७ से मृत्यु तक देश को बहबुदी के लिये निरन्तर संघर्ष किया और उसमें किसी प्रकार की जीवन के किसी भी क्षण में कोई कमी नजर आई हो, ऐसा हमें मालूम नहीं हो रहा है। ये पंडित नेहरू थे, जो १९४७ से लेकर १९६४ तक निरन्तर एक स्वतन्त्र देश के प्रधान मन्त्री रहे। इतिहास में इस प्रकार के व्यक्तियों का मिलना मुश्किल है जो लगातार १७ वर्षों तक इतने बड़े देश के भूखण्ड पर प्रधान मंत्री के पद पर रहें और इसी प्रकार के लोक-प्रिय रहे जिस प्रकार का उनका पहिले का जीवन लोक-प्रियता में बंधा था। १९४७ में मैंने पंडितजी का भाषण सुना और उस समय इसी जयपुर नगर में उनके भाषण को सुनने के लिये लाखों की तादाद में लोग उपस्थित थे और लाखों की तादाद में लोग उनके भाषण को सुन कर अपना रास्ता बनाते थे। उसी तरह से लोगों की भीड़ थी जब वे पिछली बार जयपुर में आये। उसी प्रकार की भीड़ इस बात का संकेत करती है कि राजनैतिक जीवन में रहते हुए भी, प्रधान मन्त्री के पद पर रहते हुए भी, एक आदमी निष्ठा से, ईमानदारी से, सेवा भाव से और देश को उन्नति की ओर ले जा सकता है। लोकजीवन में राजनैतिक पद पर रहते हुए भी सेवाभाव से, ईमानदारी से काम करते हैं उसकी समाज इज्जत करता है, उससे देश और समाज मार्ग-दर्शन प्राप्त करता है। मैं ऐसा समझता हूँ कि पंडितजी ने हमारे समक्ष सबसे बड़ा उदाहरण पेश किया है। हम सामाजिक, राजनैतिक जीवन में इसको लाना शुरू कर दें तो देश में जिस प्रकार का अभाव और घृणा और देश में कुटिल नीतियें आदि हैं उसका निराकरण करने में सफल हो सकते है और हम अपने आप से इन समस्याओं पर काबू पा लेंगे।

मेरे विचार से इस सम्बन्ध में यह हो सकता है कि हम पंडितजी के प्रति अपनी मौखिक श्रद्धान्जली अर्पित करें, इस सदन द्वारा प्रस्ताव पास करके मौखिक श्रद्धान्जली

(श्री भैरोंसिंह)

अर्पित कर दें, पर यदि उसे कार्य रूप में परिणत करने की चेष्टा करें, जैसी कि मुझे उम्मीद है करेंगे, यदि उसको कार्य रूप में परिणत करने की, राजनैतिक जीवन समाज में प्रेम का पात्र बना रहे, इस प्रकार का उनके जीवन से उदाहरण लेकर स्थिति पैदा करेंगे तो वह स्थिति नेहरू जी के प्रति बहुत बड़ी श्रद्धाञ्जली होगी।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी तरफ से और अपने दल की तरफ से पण्डितजी के प्रति श्रद्धान्जली अर्पित करते हुए अपना स्थान ग्रहण करता हूँ।

श्री मुरलीधर व्यास (बीकानेर प्रजा समाजवादी) : अध्यक्ष महोदय पंडित जवाहर लाल नेहरू हमारे मुल्क की आजादी के एक महान् स्तम्भ थे। देश में आजादी के बाद में हमारे देश के बहुत से नेता देश से चले गये और उसके बाद में गांधीजी के निधन के बाद में देश में एक पण्डित जवाहरलाल नेहरू का ही ऐसा व्यक्तित्व था जो छोटे बच्चे से लेकर बूढ़े आदमी तक फैला हुआ था। अब उस बात के ऊपर दूसरा ऑल्टरनेटिव सोचते हैं तो ऐसा मालूम पड़ता है कि निकट भविष्य में ऐसा व्यक्तित्व हमें नजर नहीं आता। नेहरू जी की जो आजादी के जंग में सेवाएं थीं वे देश व्यापी थीं। राजस्थान के राजनैतिक आन्दोलन में हमारे यहां पंडित जवाहरलालजी नेहरू का बहुत बड़ा स्थान था। रियासती आन्दोलन में एक दफा मतभेद भी हुआ, महात्मा गांधी कहते थे कि रियासतों में राजाओं के प्रति अभी आन्दोलन नहीं किया जाय। यद्यपि उनकी भावना उस समय यह थी कि हमें सबसे पहले मिल कर विदेशी हुकूमत को हटाना है, पर पंडितजी इस बात के हामी थे कि हमें तो पूरी गुलामी को हटाना है, और इसी लिये रियासतों में आन्दोलन जारी रखा गया।

नेहरूजी के जीवन में विभिन्न विशेषताएं थीं। मैं समझता हूँ कि नेहरूजी ने हमारे देश को सबसे बड़ी देन दी है तो वह उनकी सेवाओं की, बलिदान की, कुर्बानी की और सत्यवादिता की है। ये चार चीजें उनके जीवन में थीं कि चाहे कैसा भी कठोर से कठोर समय क्यों न हों, चाहे कितने ही मिलने वाले मित्र हों, जब उनको यह मालूम हो गया कि यह बात गलत है तो वे नहीं सोचते थे कि कौन से देश के साथ मेरी मित्रता है, कौन से देश के साथ नहीं। उनकी सबसे बड़ी विशेषता थी कि सत्य बात को दृढ़ता से कहें। चीन के मामले में वे बराबर कहते रहे कि चीन को राष्ट्र संघ में लिया जाय, साम्राज्यवादी गुट का कोई हो, पर उनको जहां मालूम पड़ा कि उनका शोषण किया जाता है तो उन्होंने अपनी आवाज बुलन्द की। सत्य बात को दृढ़ता के साथ कहने की उनकी सबसे बड़ी विशेषता थी। लोकतन्त्र में यह सबसे परम आवश्यक है कि बुराई के खिलाफ चाहे वह निकटस्थ सम्बन्धी की ही हो, हिम्मत के साथ कह दें, तो नेहरूजी की इस सत्यवादिता की बात को हम सीख सकते हैं।

दूसरी बहुत बड़ी बात जो नेहरूजी के अन्दर दिखती है वह यह है कि वे हमेशा अन्याय के खिलाफ लड़ते रहे। २५ साल से ५० साल की उम्र तक लगातार लड़ने वाला कोई व्यक्ति अगर हुआ है तो वे पण्डित जवाहरलाल जी नेहरू हैं जिन्होंने अपना सारा

(श्री मुरलीधर व्यास)

जीवन अन्याय के खिलाफ लड़ाई में लगा दिया जहाँ तक बोलने का सवाल है मैं समझता हूँ दुनियां में और देशों के बड़े बड़े नेता हुए हैं वे भी बोले, पण्डित जवाहरलाल जी नेहरू भी बोले पर जितनी ज्यादा हिम्मत के साथ, दृढ़ता के साथ जो बोले हैं उनकी गिनती कर ली जाय तो अन्य किसी देश का नेता इतना अधिक, इतनी दृढ़ता के साथ बोलने वाला नहीं हुआ।

सबसे बड़ी चीज उनके जीवन से हमें लेनी है तो वह त्याग है, जितना सेक्रिफाइस उन्होंने किया उसका अगर मूल्यांकन करें, चिन्तन करें तो हमें इसका सही पता चलेगा। कलकत्ता में इस दुखद समाचार के बाद जब मैं कमेंटरी सुन रहा था तो मेरी भतीजी कहने लगी कि नेहरूजी के लड़के बच्चे कहां हैं ? मैंने कहा एक लड़की है तो उसने पूछा कि नेहरूजी के बाद वह कहां रहेगी ? तो मेरे सामने सवाल आ गया कि हिन्दुस्तान का प्रधान मन्त्री, जो १७ साल प्रधान मन्त्री रहा और बच्ची पूछती है कि उनकी लड़की कहां रहेगी, दिल्ली में कोई एक स्थान नहीं बता सका कि नेहरूजी ने उसके लिए मकान बना दिया है। मैं नहीं बता पाया। जिस पद पर बैठ कर एक व्यक्ति अपने परिवार की एक मात्र लड़की के लिये कुछ भी नहीं करे, अपना सारा जीवन सेक्रिफाइस में ही बिता दे, इस प्रकार का त्याग हिन्दुस्तान में हर एक के जीवन में हो जाता तो हिन्दुस्तान का कितना कल्याण हो जाता, पर हम अपने जीवन में उन चीजों को नहीं उतार सके। जहां तक नेहरूजी के खुद के सोचने का और इन चीजों को अपने जीवन में उतारने का सवाल था इसमें वे कभी पीछे नहीं रहे। अपने जीवन में उतारने की उनकी यह बहुत बड़ी बात यदि हम अपने जीवन में उतार लें तो यह उनके प्रति सच्ची श्रद्धान्जली होगी और देश का बड़ा कल्याण होगा।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी ओर से और अपनी पार्टी की ओर से श्रद्धान्जली अर्पित करता हूं।

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर साम्यवादी) : अध्यक्ष महोदय, नेहरूजी के निधन पर जो मुख्य मंत्रीजी ने प्रस्ताव रखा है, उसके अनुमोदन के लिये मैं खड़ा हुआ हूं। दरअसल नेहरूजी का निधन अभी हमारे इतना निकट है कि वास्तव में जो उनकी देन हमारे राष्ट्र के लिये है उसका पूरी तरह से मूल्यांकन कर पाना आज मुश्किल है। अध्यक्ष महोदय, नेहरूजी को जो स्थान हमारे राष्ट्र में प्राप्त है, मेरे खयाल से हमारे देश में वह स्थान यूनिक है क्योंकि नेहरूजी को ही यह गौरव प्राप्त है कि उनका व्यक्तित्व दरअसल हमारे देश की आजादी की लड़ाई और आजादी के बाद हमारे देश के निर्माण का मौका मिला, उसका कुल मिला कर नेहरूजी का समकालीन इतिहास है, नेहरूजी के नेतृत्व में वह इतिहास बना है। नेहरूजी जब हमारे देश की राजनीति में आये तो उन्होंने अपने व्यक्तित्व की, विचारों की देन हमारे स्वतन्त्रता आन्दोलन को दी। आजादी के लिये हमारे यह पहले संघर्ष हो रहा था पर नेहरूजी ने आकर जो आजादी के संघर्ष का आवरण

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

था उसमें आत्मा डाल दी। जहां हम इस बात के शक और शुब्ह में घूम रहे थे कि हम केवल डोमिनियन स्टेट्स ले लें या पूरी आजादी लें, नेहरूजी के नेतृत्व में हमारे देशवासियों ने निर्णय किया कि हम डोमिनियन स्टेट्स के लिये नहीं, पूर्ण आजादी के लिये लड़ेंगे। इतना ही नहीं समस्त देश के मजदूर किसान किस रूप में आजादी को देखें इस चीज को राष्ट्रीय आन्दोलन के सामने रखा, और राष्ट्रीय कांग्रेस को इस बात के लिये कमिट कराया कराची रिजोल्यूशन के जरिये और कितने ही रिजोल्यूशन्स के जरिये कि आजादी मिलेगी उसके बाद किस प्रकार का हिन्दुस्तान बनायेंगे, किस प्रकार के हकूक-राइट्स किसानों को मजदूरों को मिलेंगे। इस प्रकार के जो बेसिक राइटस का चार्टर था वह नेहरूजी के नेतृत्व में उनकी प्रेरणा से हमारे देश के स्वतंत्रता आंदोलन को मिला। इतना ही नहीं, उससे पहले हमारे देश का स्वतंत्रता आंदोलन एक प्रकार से आइसोलेशन में चलता था और दुनिया में जो आजादी के लिए जिद्दोजहाद चल रही थी उससे कुछ अलग सा चलता था लेकिन नेहरूजी ने आकर हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को, इस प्रकार से सारे संसार में सारे साम्राज्यवाद के खिलाफ जो मुहिम चल रही थी, उसके साथ जोड़ा और कहा कि हमें एक दूसरे के साथ मिलकर साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ना चाहिए। इस तरीके से पंडित नेहरू ने हमारे हिंदुस्तान में बागडोर अपने हाथ में न होते हुए भी स्पेन के लोगों के साथ सहानभूति की, चीन में जब फेसिस्टवाद के खिलाफ वहां के लोग लड़ रहे थे, तब वहां अपना मिशन भेजा। इस प्रकार यूरोप और दूसरे देशों में, जहां स्वतंत्रता आंदोलन चल रहे थे, उनके साथ अपना संबंध जोड़ा। इससे नेहरूजी ने हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को एक राष्ट्रीय रूप ही न देकर अंतर्राष्ट्रीयता का स्वरूप दिया और इन्टरनैशनल ब्रॉदरहुड का आज हम एक हिस्सा हैं, यह देन नेहरूजी ने हमारे देश को दी।

आजादी प्राप्त होने के बाद बहुत बड़े बड़े प्रश्न थे। और भी कितने ही देश आजाद हुए हैं। परन्तु कुछ मौलिक बात दृढ़ता से हमारे देश के सामने उन्होंने रखने की कोशिश की, उसमें चाहे पूरी तरह से सफल न हुए हों परन्तु जिस दृढ़ता और विश्वास के साथ, जिन आधारभूत स्तंभों पर राष्ट्र और देश का निर्माण करना चाहते थे वह अवश्य हमारे देश के लिए एक मार्ग-दर्शन की चीजें हैं। मसलन सेक्यूलरिज्म हैं, वे चाहते थे कि यह हमारे देश का आधार होना चाहिए। इसमें उनको बड़ी बाधाएं आईं, ऐसी शक्तियां थीं जिन्होंने प्रयत्न किया दूसरे तरीके से, जिससे हमारे देश का नुकसान भी हुआ, हिन्दुस्तान का बटवारा हो गया, लेकिन फिर भी हमने अपने देश में, बावजूद पाकिस्तान में जो कुछ हो, सैक्यूलरिज्म को नहीं छोड़ा और वह आज भी हमारे राष्ट्र का स्तंभ है और बना रहेगा। इसके अलावा किस प्रकार से अपने देश को माडर्न स्टेट बनाया जाय उसका कन्सेप्शन भी उसके दिमाग में था और योजनाबद्ध विकास के द्वारा देश को आगे बढ़ाया जाय, प्लान्ड इकॉनामी हमारे देश में हो और अंत में समाजवाद हमारे देश में स्थापित हो, इस प्रकार की

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

कल्पना लेकर वे चलते थे और यह आधार हमारे देश का आगे के निर्माण का नक्शा देता था। वे उसमें कहां तक सफल हुए, यह बात कन्ट्रोवर्शियल भी हो सकती है परन्तु इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि उस बुनियादी तरीके से सोच कर, नए तरीके से सोच कर, नेहरूजी ने देश को आगे चलाने का प्रयत्न किया।

इस तरह से फोरिन पॉलिसी में नॉन-अलाइन्मेंट के तरीके पर हमारा देश चले और हमारे देश का विकास दूसरे देशों से पीसफुल कोएग्जिसटेन्स से हो और हम दुनिया के उन तमाम देशों के, जो साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ रहे हैं, साथ हों, चाहे एशिया हो, चाहे अफ्रीका हो, चाहे लैटिन अमरीका हो, उनके साथ कंधे से कंधा मिला कर चलें, यह नेहरूजी ने मजबूती के साथ आवाज उठाई और मैं समझता हूं कि नेहरूजी को हम वास्तव में श्रद्धांजली समर्पित करेंगे यदि उन बातों को, उसूलों को जो उन्होंने देश में हमारी नैशनल पॉलिसी की बनवाई, उनको मजबूत करें।

वह पंडित नेहरू के लिए सही श्रद्धांजली होगी। इन्हीं शब्दों के साथ में अपनी श्रद्धांजली अर्पित करता हूँ।

श्री हरिराम चौहान (तिजारा साम्यवादी) : पंडित नेहरू हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन के बहुत बड़े नेता रहे हैं। जहां तक राष्ट्रीय आंदोलन का सवाल है, राष्ट्रीय आंदोलन के लिए जब हिन्दुस्तान का किसान और मजदूर, हिन्दुस्तान का छोटा दुकानदार, हिन्दुस्तान की आम जनता जिस आजादी के आन्दोलन में लग रही थी, उसके लिए उसको सही गाइडेंस देने के लिए जवाहरलाल जैसे नेता की बड़ी जरूरत थी और उन्होंने उस आन्दोलन को पूरी तरह से निभाया। जहां तक उपनिवेश का सम्बन्ध है, साम्राज्यवाद का सम्बन्ध है, उन्होंने उस दौरान के अन्दर, राष्ट्रीय आजादी के दौरान के अन्दर, दुनियां की जितनी भी आजादी की लड़ाईयां थीं उन तमाम लड़ाईयों से अपने आपको जोड़ते थे, वह अपने आप में एक शक्ति थी और उसके नतीजे निकलते थे, जैसे रूस के अन्दर अक्तूम्बर के अन्दर १९१७ में क्रान्ति हुई उससे उनको बड़ी प्रेरणा मिली, उन्होंने पूरी तरह से उसका वर्णन किया अपने लेखों के अन्द, अपनी किताबों के अन्दर और पूरी तरह से साम्राज्यवादियों के खिलाफ उनका एक रुख रहा।

१९४७ के बाद भी वे एक बहुत बड़े देश के जो दूसरे नम्बर का देश है, उसके प्रधान मन्त्री थे और उसकी वजह से सारी दुनियां के अन्दर उनका एक बहुत बड़ा सम्मान था। उनके राष्ट्रीय आन्दोलन की वजह से, उनकी निडरता से, जो उनके कार्य थे, उनकी वजह से और एक बहुत बड़े देश के प्रधानमन्त्री होने के नाते, सारे संसार के अन्दर उनका बहुत बड़ा मान था। और जहां तक उपनिवेश का सम्बन्ध है, कॉमनवेल्थ के अन्दर होते हुए भी, साम्राज्यवादियों के खिलाफ, समय समय पर उन्होंने आवाज उठाई है। वे इतनी शक्ति, इतना बल रखते थे कि वे पूरी तरह से गाइडेंस देते थे, एक

(श्री हरिराम चौहान)

लाइट देते थे सारे देश को और दूसरे देशों को भी देने की कोशिश करते थे। हो सकता है कि उनके विचारों से चाहे कोई सहमत न हो, लेकिन फिर भी वे पूरी तरह से गाइडेंस देने की कोशिश करते थे। जहां तक विचारों का सम्बन्ध है, हो सकता है कि किन्हीं चीजों के अन्दर हम मतभेद भी रखते हों लेकिन जहां तक उनकी ईमानदारी का सम्बन्ध है, उनके काम के करने का संबन्ध है वे किस तरह से रात दिन एक करके १८-१८ घण्टे काम करते थे। जहां तक उनकी कुर्बानियों का सम्बन्ध है, उन तमाम चीजों से हम लोगों को और सारे देशवासियों को एक प्रेरणा मिलती है। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी श्रद्धांजली अर्पित करता हूँ।

श्री अध्यक्ष : हमारे देश के प्रिय नेता व प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलालजी नेहरू के निधन से हमारे देश को जो गहरा धक्का लगा है जो क्षति हुई है वह, मैं समझता हूँ, पूरी होना नामुमकिन है। सदन के माननीय नेता, विरोधी पक्ष के माननीय नेता व अन्य माननीय सदस्यों ने अपने जो विचार व्यक्त किये हैं, नेहरूजी के प्रति श्रद्धान्जली अर्पित की है, उनमें मैं अपने आपको सम्मिलित करता हूँ।

अभी कई भाषण हुए। उनमें नेहरूजी के विचार थे. उनके जो विशेष गुण थे उनके बारे में कई बातें कहीं गईं। अगर उनके सारे गुणों का वर्णन किया जाय तो, मैं समझता हूं, उनका कभी अन्त नहीं होगा। उनका व्यक्तित्व इतना धनी था, किसी पहलू पर अगर बोलने लगें. विचार करने लगें तो उनकी छाप हमारे राष्ट्रीय जीवन पर ही नहीं, किन्तु समस्त विश्व भर में किसी न किसी रूप में हमें अवश्य दृष्टिगोचर होगी।

एक दो बातें इस समय उल्लेख करना, मैं समझता हूं, उचित होगा, उपयुक्त होगा और वह मैं माननीय सदस्यों के समक्ष रखना चाहूंगा।

जो सबसे बड़ी बात मेरे ध्यान में इस समय है वह यह है कि नेहरूजी का प्रजातंत्र में अटूट विश्वास था और उनकी एक बहुत बड़ी देन जो है वह यह है कि उन्होंने हमारे देश में संसदीय प्रणाली की जड़ जमाने में बड़ा भारी योग दिया। जिस तरह से उनके विचार थे. उनका व्यवहार था, जिस तरह से सदन में आते थे और संसदीय प्रणाली की जो विभिन्न बातें हैं उन्हें जिस आदर की दृष्टि से सदन के सामने रखते थे उससे एक बहुत बड़ी गहरी छाप उस सदन पर ही नहीं बल्कि सारे भारतवर्ष में जो इस क्षेत्र में कार्य करते हैं उन पर पड़ी है। मैं समझता हूं उन्होंने जो संसदीय प्रणाली के प्रति आदर के भाव एवं उसके प्रति व्यवहार जो हमारे सामने प्रस्तुत किये हैं वे हमारे लिये अनुकरणीय हैं और हम उन पर इस तरह से चलेंगे कि जिससे प्रजातन्त्र और संसदीय प्रणाली की हमारे भारतवर्ष में बहुत ख्याति तो होगी ही परन्तु उसके साथ साथ उसकी कामयाबी में भी कोई कसर नहीं रहेगी।

कई दफा मैंने भी और अन्य कई माननीय सदस्यों ने भी संसद में देखा होगा कि नेहरूजी जब आते थे तो किस तरह से सदन की कार्यवाही में भाग लेते थे। उनके विभाग से सम्बन्धित कार्य न होते हुए भी

(श्री अध्यक्ष)

वे बहुत समय तक सदन में बैठे रहते थे। यदि उनके मन्त्री एवं सहयोगी किसी प्रश्न का उत्तर न दे सकते थे तो वे स्वयं उसका उत्तर देते थे और यदि किसी बात की जानकारी न होती थी तो उसकी जानकारी करने के लिए समय ले लेते थे और जानकारी करके सदन में उत्तर देते थे। यह सब इस बात का द्योतक है कि सदन के प्रति उनके दिल में आदर भाव थे और आदर-भाव होने का मतलब यह है कि संसदीय प्रणाली और प्रजातन्त्र में उनका अटूट विश्वास था।

देश में बहुत सारी बातें हुई है। जिस तरह से हमारे देश में परिवर्तन आया है वह शान्तिपूर्ण ढग से एवं संसदीय तरीके से आया है। उससे भी हमें विश्वास होता है कि, यह भी उन्हीं की देन है। उनके सुदृढ नेतृत्व एवं देश के लिए अनवरत कार्य करते रहने से यह सम्भव हुआ है। यदि उनके बताये हुए रास्ते पर हम चलें और जो आदर्श प्रजातन्त्र और संसदीय प्रणाली का उन्होंने हमारे सामने रखा है उसको कायम रख सकें तो आगे चल कर उनके प्रति यह सबसे बड़ी देन होगी। उन्होंने देश में प्रजातन्त्र की नींव डाली, उसको सींचा एवं आजादी के बाद देश के विकास में जो जो बातें हुई हैं उन सबमें उनका बड़ा हाथ रहा है।

मैं इस समय अधिक कुछ नहीं कहना चाहूँगा। सदन के सामने जो प्रस्ताव हैं, मैं माननीय सदस्यों से निवेदन करूंगा कि वे दो मिनट मौन खड़े होकर अपनी श्रद्धा प्रकट करके उसको पारित करें।

(तत्पश्चात दो मिनिट मौन खड़े रह कर दिवंगत महान् आत्मा के प्रति श्रद्धान्जली अर्पित की गई एवं प्रस्ताव की स्वीकृति हुई)

प्रस्ताव पारित हुआ।

(विराम)

सदन की कार्यवाही कल प्रातःकाल ८ बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

(तत्पश्चात् सदन की कार्यवाही म० प० ४. १८ बजे दिनांक ४ अगस्त १९६४ के प्रातः ८ बजे तक के लिए स्थगित हुई)

———

शुद्धि-पत्र

(सोमवार, दिनांक ३ अगस्त, १९६४)

स्कम्भ सं०	पंक्ति सं०	अशुद्धि	शुद्धि
१	३	सत्र	सत्र
,,	१३	एवं	एवं
,,	१४, १५	श्रद्धाञ्जलियां	श्रद्धाञ्जलियां
४	शीर्षक	श्रद्धाञ्जलिय	,,
६	१	नेतत्व	नेतृत्व
,,	अन्तिम से ५	**महारावल श्री लक्ष्मणसिंह**	**महारावल श्री लक्ष्मणसिंह**
७	शीर्ष	(महारावल श्री लक्ष्मणसिंह)	(महारावल श्री लक्ष्मणसिंह)
,,	५	करौड़ों	करोड़ों
,,	१०	बकसने	बख्शाने
,,	१५	कमी	कभी
,,	अन्तिम	पंडित नेहरू	पंडित नेहरू
८ व १०	शीर्षक	श्रद्धाञ्जलिया	श्रद्धाञ्जलियां
१३	७	जय	जाय
१४	अन्तिम से ३	अन्दोलन	आन्दोलन
१५	१०	कांग्र स	कांग्रेस
,,	१२	जिरये	जरिये
,,	१३	आजदी	आजादी
,,	२५	राष्ट्रीय	राष्ट्रीय
,,	अन्तिम से २	सहानु भूति	सहानुभूति
२२	१२	प्रस्ताव	प्रस्ताव